



अकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

अंक : 11

सहयोग शुल्क : रु.1

नवम्बर 2017

दिव्यांग सैतु

संपादक : - संतश्री अकरुषि प्रितेशभाई



कवर स्टोरी
शेखर नायक

कप्तान, भारतीय
नेत्रहीन क्रिकेट टीम

पान नं. 11

पढ़िए, साहस और
जुनून की कहानी
- अरुणिमा सिन्हा

पान नं. 12



विशेष जरूरत वाले बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष शिक्षक ही नहीं, बल्कि उनके लिए विशेष स्कूलों का होना भी जरूरी है।

-सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ इन्डिया



यह राष्ट्रीय संकल्प होना चाहिये कि 2022 तक, जन्म से ही अस्थि-विकार से पीड़ित प्रत्येक बच्चे को इस बीमारी का पता चलते ही उपचार मिले।

-श्री रामनाथ कोविंद, राष्ट्रपति, हिन्दुस्तान



दिव्यांग जन समाज की एसी दिव्य 'डोर' है, जिसको सामाजिक और कानूनी सुरक्षा प्रदान करने की जरूरत है। राष्ट्र का एसा मानकोष है, जो अब दूसरी कई तरहों से सक्षम बन रहा है।

- संतश्री अकरुषि प्रितेशभाई





निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगों को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रू. ५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगों के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रू. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह
प्रीमियम
ऌंकार
फाउन्डेशन द्वारा
भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरूरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)



संपादकीय

*जियो तो ऐसे जियो की मौत की खाहिश क्रदमों पर पड़ी हो
और मरो तो ऐसे मरो की जिंदगी तुम्हे वापिस ले जाने कब्र पर खड़ी हो।*

मन में उमंग हो और जीवन में कुछ बनने की ललक, तो दिव्यांगता की अड़चन प्रगति में आड़े नहीं आने पाती। इस क्रम में अवरोध तब पैदा होता है, जब निजी अक्षमता को लेकर मनुष्य अपनी सामर्थ्य को कम करके आँकना शुरू करता है। पर सच्चाई यह है कि उसकी असमर्थता शारीरिक कम, मानसिक ज्यादा होती है। भौतिक अंग-अवयवों की कमी किसी की प्रतिभा के प्रकट-प्रत्यक्ष होने में उतनी बाधा पैदा नहीं करती, जितनी कि मन की हताशा। इसे यदि दूर किया जा सके, तो कोई कारण नहीं कि अपाहिज स्तर के व्यक्ति भी अपनी संपूर्ण क्षमता एवं प्रतिभा का परिचय न दे सकें।

क्षमता का परिचय आये दिन कोई न कोई दिव्यांग जन देता रहता है। प्रतिभा का परिचय तब सार्थक होगा जब 'हम कितने जिम्मेदार नागरिक हैं' वह साबित करेंगे। हाँ, ध्वनि व चित्र माध्यमों की अतिरिक्तता की वजह से मीडिया द्वारा ज्यादातर नेगेटिव बातें कानों को सुनाई दे पड़ती है व आँखों को दिखाई देती है। लेकिन सब धुँधला है। ऐसे वातावरण में तो विश्वास ही खत्म हो जाए। हम हमेशा कुछ न कुछ उम्मीद बनायें रखते हैं। अपना जीवन वही दैवी श्रद्धा, उम्मीद व भावना से जुड़ा हुआ है।

आज सरकार सुनती तो है, लेकिन कुछ प्रतिक्रिया नहीं देती। मानो पोलियो हुआ हो, और निष्क्रिय हो। सरकारें तो वर्च्युअल दुनिया है, डायनेमिक है। अगर कोई स्टेटिक है, तो वह जनता है। इसीलिए, अपनी देश के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाने हेतु अगले माह आ रहे निर्वाचन का हिस्सा बनें। कुछ एसा करके दिखाए ताकि अपने वजूद का शासक पक्ष को भी पता चलें। वोट डालें। सही लोकसेवक चुनें। मताधिकार का उपयोग जरूर करें। लोकतंत्र में दिव्यांगजन के महत्त्व को परिपूर्ण करें।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

नवम्बर : 2017, पृष्ठ संख्या : 16,
वर्ष : 01, अंक : 11

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संत श्री ॐ ऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

ई-72, आयोजन नगर सोसायटी,

श्रेयस क्रोसिंग के पास, वासणा,

अहमदाबाद-000000

मो. 99749 55365,

9974955125

मुद्रक

प्रिन्टविजन प्रा. लि.

आंबावाडी बजार, अहमदाबाद-6



क्लबफुट मरीजों को उपचार मिले इसका संकल्प होना चाहिए: राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि, 'यह राष्ट्रीय संकल्प होना चाहिये कि 2022 तक, जन्म से ही अस्थि-विकार से पीड़ित प्रत्येक बच्चे को इस बीमारी का पता चलते ही उपचार मिले।'

राष्ट्रपति कोविंद ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के सहयोग से सी.यू.आर.ई. इंडिया की ओर से आयोजित ग्लोबल क्लबफुट कांफ्रेंस का उद्घाटन करते हुये कहा कि एक अनुमान के मुताबिक देश में प्रति वर्ष करीब 50,000 ऐसे बच्चों का जन्म होता है जो क्लबफुट (अस्थि-विकार) से पीड़ित होते हैं जिसका उपचार हो सकता है।

हाल तक क्लबफुट से ग्रसित बच्चों का ऑपरेशन द्वारा इलाज किया जाता था। यह खर्चीला था तथा बच्चों और उनके

परिजनों के लिए पीडादायक था। ग्रामीण इलाकों में ऑपरेशन की सुविधा मुश्किल थी इस कारण बहुत से बच्चों को इलाज नहीं मिल पाता था। उन्हें आजीवन विकलांगता का दंश झोलना पड़ता था। उन्होंने कहा कि, क्लबफुट के इलाज के लिए एक नई 'पॉसेटि पद्धति' विकसित की गई है। क्लबफुट के इलाज के लिए इसे स्वर्ण मानक माना जा रहा है। इसमें ऑपरेशन की आवश्यकता नहीं रह जाती है। पॉसेटि पद्धति में यह अनिवार्य है कि बच्चा अपनी बीमारी की पूरी दवा ले। इसके पश्चात कई वर्षों तक अपने इलाज की नियमित जांच करवाते रहें। यदि हम सफलता चाहते हैं तो हमें इसे मिशन के रूप में लेना चाहिए। जैसा कि हमने पोलियो और चेचक के मामले में कर दिखाया है।

हेलेन केलर अवोर्ड्स 2017, दिव्यांगो के लिए

अ पने अठारहवें वर्ष में हेलेन केलर पुरस्कार ने न केवल कॉर्पोरेट्स, गैर-सरकारी संगठनों और व्यक्तियों द्वारा की गई सामाजिक जिम्मेदारी की पहचान का नेतृत्व किया है, बल्कि भारत के लाखों विकलांगों के अधिक सशक्तिकरण के लिए प्रयत्न किया है।

विकलांग लोगों के लिए रोजगार संवर्धन के लिए राष्ट्रीय केंद्रने 1999 में रोजगार के क्षेत्र में अलग-अलग सक्षम लोगों के लिए समान अवसरों पर व्याख्यान देने के लिए हेलेन केलर पुरस्कार शुरू किया था। भारत में विकलांग लोगों के लिए रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए निगमों और व्यक्तियों द्वारा किए गए कार्य को पहचानने के लिए एसोसिएशन का भी लक्ष्य था।

इन वर्षों में, इन पुरस्कारों को लोगों और संगठनों को सम्मानित करने के लिए सबसे प्रतिष्ठित भारतीय मानक बन गए हैं, जो विकलांगों के लिए रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं।

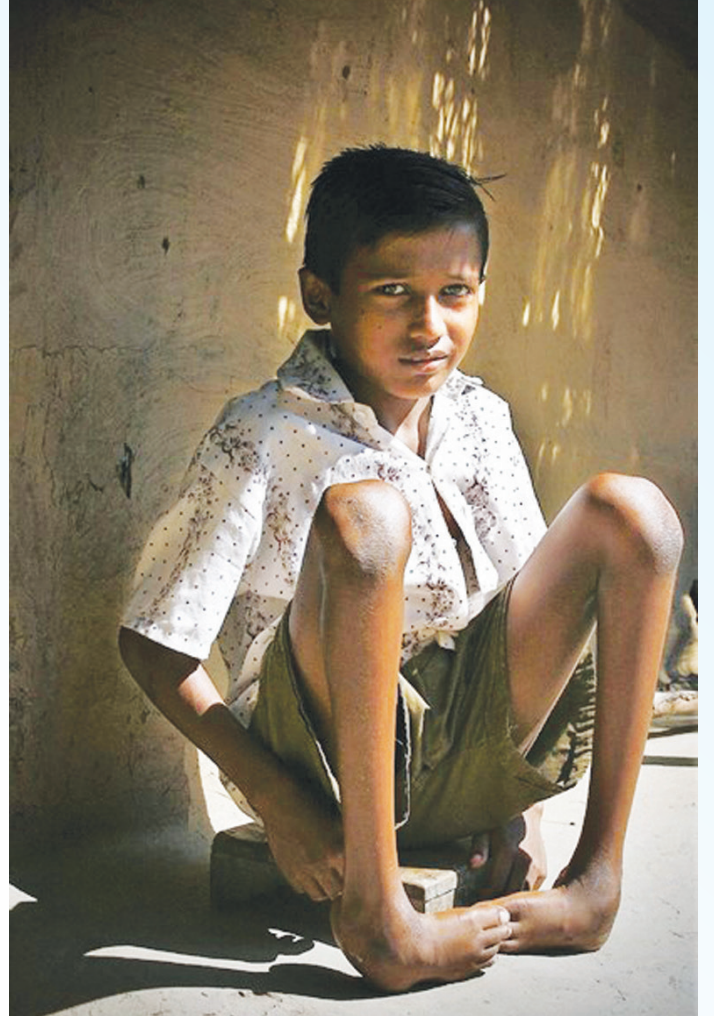
इस वर्ष, तीन अलग-अलग श्रेणियों के अंतर्गत, 10 पुरस्कारों की घोषणा की गई है, जिसे विश्व विकलांगता दिवस की पूर्व संध्या, 2 दिसंबर को नई दिल्ली में एक साधारण समारोह में मनाया जाएगा।

रोलमॉडल विकलांग व्यक्तियों:

- **डॉ. चारुदत्ता जाधव** - हेड एक्सेसिबिलिटी सीओई, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज लिमिटेड;
- **डॉ. देवशी जोशी** - स्टोर सहायक, ग्राम भारत;
- **निर्मिता नरसिंहन** - नीति निदेशक, इंटरनेट और सोसाइटी केंद्र;
- **प्रदीप सिन्हा** - कार्यकारी, आईटी परिसंपत्ति प्रबंधन में समस्या पुनर्प्राप्ति केंद्र, डेल - ईएमसी

अक्षम लोगों के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि के रोल मॉडल समर्थक

- **एसवी कृष्णन** - सीईओ, डायलॉग इन द डार्क - एसीई
- **स्वामीनाथन सुब्रह्मण्यम** - प्रबंधक, भुगतान और संचालन, एएनजे बेंगलुरु सेवा केंद्र
- **भूमिका मॉडल कंपनियां/
गैर सरकारी संगठन संस्थाएं**
बैरियर ब्रेक सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड
हट्टी फूड एंड बेवरेजेज प्राइवेट लिमिटेड
द लेमन ट्री होटल कंपनी
विंध्या ई-इन्फॉर्मेडिया प्राइवेट



दिव्यांग बच्चों के लिए अलग स्कूल क्यों नहीं: सुप्रीम कोर्ट



सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को आत्मकेंद्रित, दृष्टिहीनता और बहरेपन से पीड़ित बच्चों के लिए अलग स्कूलों और विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी पर सवाल उठाए। शीर्ष अदालत ने एक मामले की सुनवाई के दौरान टिप्पणी की कि, यह सोचना ही असंभव है कि किसी न किसी प्रकार की दिव्यांगता से ग्रस्त बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ मुख्यधारा के स्कूलों में शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा, जस्टिस एएम खानविलकर और जस्टिस धनंजय वाई चंद्रचूड़ की तीन सदस्यीय खंडपीठ ने कहा कि शिक्षा प्राप्त करने को संविधान के अनुच्छेद 21ए के अंतर्गत मौलिक अधिकार माना गया है और बच्चों के निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 के तहत राज्यों का यह वैधानिक कर्तव्य है।

पीठ ने कहा, 'पहली नजर में हमारा मानना है कि विशेष जरूरत वाले बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष शिक्षक ही नहीं, बल्कि उनके लिए विशेष स्कूलों का होना भी

जरूरी है।'

स्कूल जाने वाले दिव्यांग बच्चों को मिलेगी प्रोत्साहन राशि

स्कूल जाने वाले गंभीर दिव्यांग बच्चों को अब प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। 70 प्रतिशत से अधिक उपस्थिति होने पर उन्हें हर माह 500 रुपये दिया जाएगा। सर्व शिक्षा अभियान समेकित शिक्षा के तहत एस्कार्ट एलाउंस योजना संचालित की गई है।

इसमें 6 से 14 वर्ष के गंभीर दिव्यांग बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। स्कूलों में बच्चों की 70 प्रतिशत से अधिक उपस्थिति पर उन्हें 500 रुपये हर महीने प्रोत्साहन राशि मिलेगी।

हफ्ते में दो दिन पढ़ाएंगे स्पेशल टीचर : जिले के विभिन्न ब्लॉकों के दिव्यांग व गंभीर दिव्यांग बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए स्पेशल टीचरों की तैनाती की गई है।

दिव्यांग शिवानी ने लोगों को अंगदान के लिए प्रेरित कर, अपनी शादी में लिया आठवां फेरा

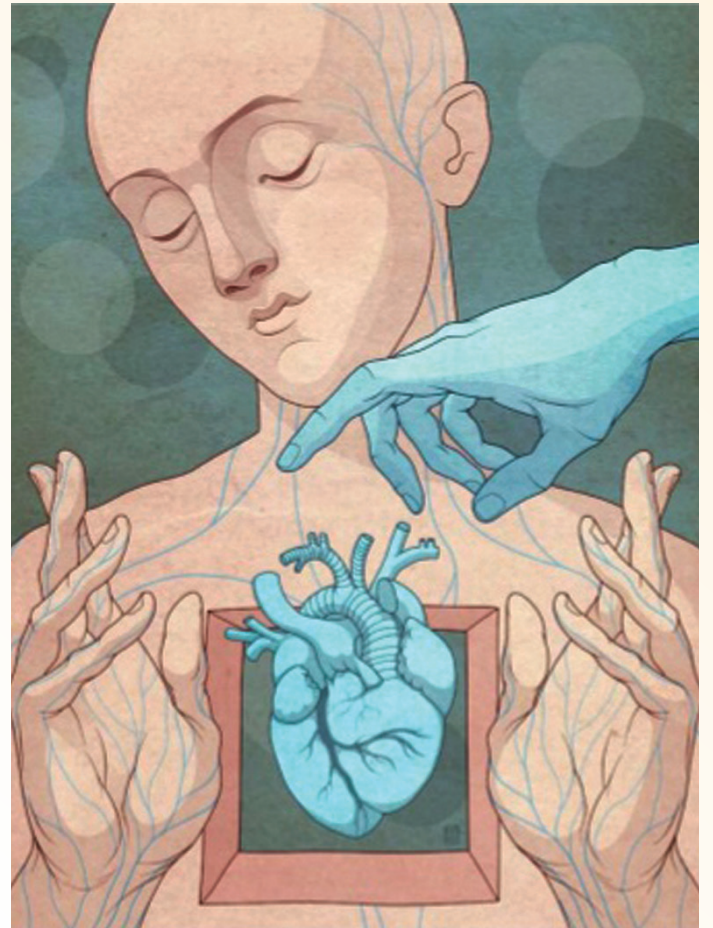
सो नीपत में एक अनोखी शादी हुई, जिसमें आठ फेरे लिए गए। सात जन्मों तक रिश्ते को मजबूत करने वाले सात फेरों के बाद आठवां फेरा अंगदान और देहदान का लिया गया। शादी में आए लोगों ने अंगदान के लिए रजिस्ट्रेशन कराया। सोनीपत निवासी आनंद कुमार की बेटी शिवानी की शादी दिल्ली के नरेला निवासी अश्विनी के साथ हुई। दुल्हन शिवानी ने कहा कि शादी के सात फेरों के साथ अपने पति को आठवें वचन अंगदान के लिए मनाया है। उसकी इस मुहिम के तहत दूल्हे के अलावा बरातियों ने भी अंगदान करने का वचन दिया। खास बात यह है कि शादी के कार्ड पर अंगदान व देहदान के लिए प्रेरित किया गया है।

क्यों शिवानी ने यह नेक कदम उठाया?

शिवानी ने बताया कि, जब रोहतक के गांव कंसाला में वह अपने मामा के घर रहकर पढ़ाई कर रही थी, तो उसकी एक सहेली बनी। किसी बीमारी के चलते उसकी सहेली का एक अंग खराब हो गया, परिजनों की लाख कोशिशों के बाद भी बदलने के लिए अंग नहीं मिला जिससे उसकी मौत हो गई। सहेली की मौत से शिवानी काफी दुःखी हुई थी, बाद में उसने लोगों को अंगदान करने व कराने के लिए प्रेरित करना शुरू किया। इस मिशन को पूरा करते हुए अब उसकी शादी होने वाली है। उसकी इस मुहिम के तहत दूल्हे के अलावा बरातियों ने भी अंगदान करने का वचन दिया है।

शादी के निमंत्रण पत्र में शरीर के नौ अंगों का दान हो सकता है एसा संदेश लिखा गया। इससे 28 प्रकार के रोगियों को बेहतर जीवन मिल सकता है। आंख, लीवर, किडनी, लंग्स, हार्ट, स्किन आदि का भी दान किया सकता है। जिन

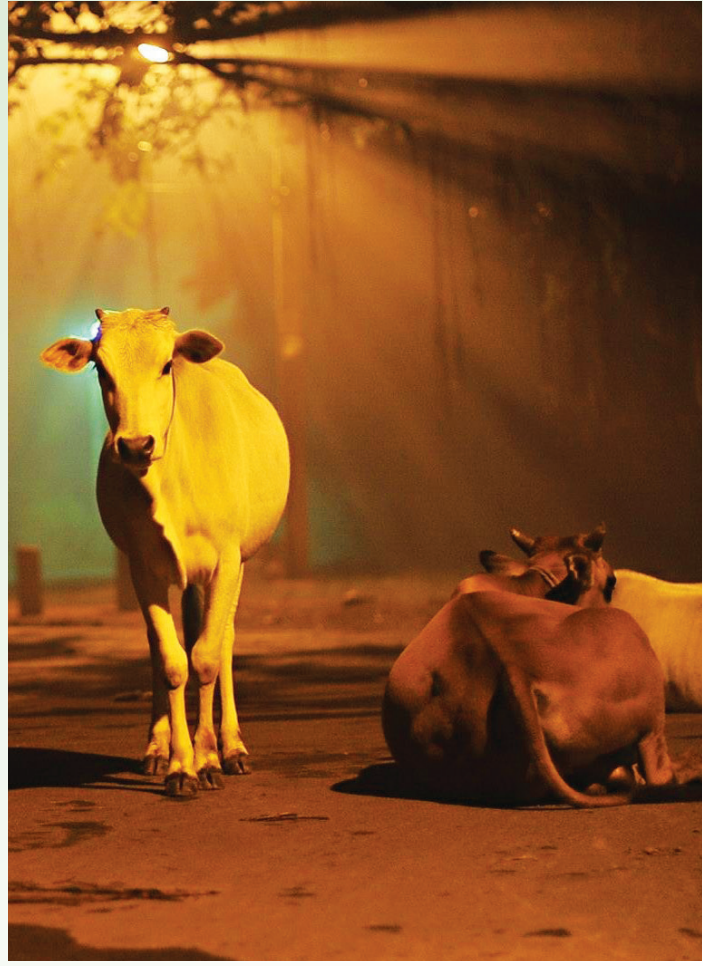
लोगों का लीवर कैंसर, हेपेटाइटिस आदि बीमारियों से खराब हो गया है, उनके लिए यदि एक व्यक्ति लीवर दान करता है तो यह तीन लोगों के लिए काम आ सकता है। त्वचा का दान किया जाए तो उसे पांच साल तक सुरक्षित रखा जा सकता है और यह तेजाब के शिकार या आग से जले लोगों के काम आ सकती है।



आंकड़े
बताते हैं

आंकड़ों के अनुसार, भारत में हर साल पांच लाख लोगों की मौत केवल अंगों के नाकाम होने के कारण होती है। इसमें दो लाख लोग लीवर खराब होने से, डेढ़ लाख लोग किडनी की खराबी और 50 हजार लोग हृदय आघात के कारण मर जाते हैं। हर साल डेढ़ लाख किडनी की आवश्यकता होती है, लेकिन केवल पांच हजार ही उपलब्ध हो पाती हैं।

अध्यापक गिराज दिव्यांग गायों की सेवा में किया सर्वस्व न्योछावर



करौली से 40 किमी दूर स्थित मंडरायल पंचायत समिति के एक सरकारी अध्यापक गिराज प्रसाद मीना ने पूरे जिले में एक मिसाल कायम कर अपना क्षेत्र का नाम रोशन किया है।

गिराज प्रसाद मीना उर्फ हरिओम ने मंडरायल में एक दिव्यांग गोशाला बना रखी है। इसमें अब मंडरायल ही नहीं बल्कि पूरे जिले के लोग अपना समय और आर्थिक सहायता देकर अब इस गोशाला में गायों की सेवा करने पहुंच रहे हैं।

गिराजप्रसाद मीना एक सरकारी अध्यापक है। लगभग 12 वर्ष पूर्व वह उदयपुर में अध्यापक पद पर कार्यरत थे। उस समय वहां पर श्री नारायण सेवा संस्थान समिति संचालित थी। उसमें दिव्यांग लोगों का उपचार किया जाता था और सही होने पर उन्हें उनके घर भेज दिया जाता था, तभी से उनके मन में दिव्यांग गायों के लिए सेवा का भाव जागा। थोड़े दिन बाद उनका तबादला करौली हो गया तो मंडरायल सब्जी मंडी में एक विकलांग गाय को देखकर वह उसे अपने घर ले आए और तभी से उनकी दिव्यांग गायों की आजीवन सेवा का संकल्प ले लिया।

मध्यप्रदेश से भी गायों को लाए:

गिराजप्रसाद मीना ने बताया सड़क दुर्घटना में कई गायों के पैर, पूंछ, आंखें चली जाती है तो कई जन्मजात विकलांग

होती है। इनमें से कुछ गाय तो ऐसी होती है जो सही हो जाती है, जिन्हें सही होने पर ठेकरा मासलपुर या अन्य गोशालाओं में छोड़ दिया जाता है और वहां पर रह रही दिव्यांग गोवंश को खांडेकापुरा लाया जाता है और उनकी सेवा की जाती है। अब तक वह करौली, करणपुर, मासलपुर, हिंडौन, सरमथुरा, धौलपुर तथा मध्यप्रदेश के कई गांवों से दुर्घटनाग्रस्त गायों को लेकर आए हैं और उनका उपचार शुरू कर दिया है। अब तक वह 25 गायों को सही कर चुके हैं और अभी उनकी गोशाला में 12 गाएं अंधी तथा 38 गाएं पैरों से विकलांग हैं।

आमदनी का 75% खर्च करते हैं गोसेवा पर:

गिराज मीना, दिव्यांग गायों की सेवा में अपना सर्वस्व न्योछावर कर चुके हैं। वह अपनी आमदनी का 75 प्रतिशत दिव्यांग गायों के चारे, पानी एवं उपचार में खर्च कर देते हैं। उन्होंने कई बार कर्ज लेकर भी गायों की सेवा की है और अब भी उन पर लाखों रुपए का कर्ज है। उन्होंने अपने घर एवं खेती की जमीन को दिव्यांग गायों की शरणस्थली बना दिया है। पहले उन्होंने अकेले गायों की सेवा का संकल्प लेकर कार्य शुरू किया।

उबेरने बेंगलुरु में दिव्यांगों के लिए स्पेशियल कैब लॉन्च की

भारत में अपनी तरह की पहली पहल में, राइड-शेरिंग कंपनी उबेर ने दिव्यांगों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए बेंगलुरु शहर में विशेष कैब लॉन्च की है। इन दोनों को उबेर एक्सेस और उबेर असिस्ट कहा जाता है। ये कैब व्हील चेयर का उपयोग करनेवालों के लिए इन-बिल्ट रैंप और अतिरिक्त बूट स्पेस के साथ आते हैं।

आईटी कंपनी MPhasis के साथ समन्वय कर उबेर ने इस सेवा को अभी केवल बेंगलुरु में शुरू किया है, लेकिन जल्द ही दूसरे शहरों में उपलब्ध होगा।



दिव्यांगों को हौसला देकर काबिल बना रही है, 'मेक माय ट्रिप'

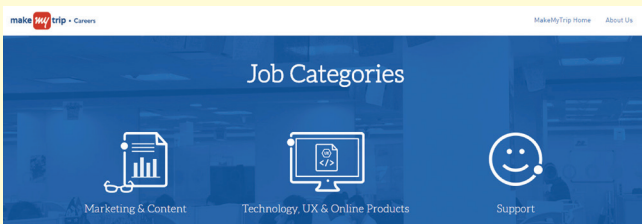
दुनिया में जहां एक ओर दिव्यांगों को किसी काम का न मान उन्हें नकारा जा रहा है वहीं देश में एक ऐसी कंपनी भी काम करती है जो दिव्यांगों को काबिल बनने का मौका दे रही है। ट्रैवल कंपनी मेक माय ट्रिप विकलांगों को काबिल बना रही है। साथ ही उनकी क्षमता के हिसाब से मौका देकर रोजगार के अवसर भी मुहैया करा रही है।

ट्रैवल पोर्टल मेक माय ट्रिप के एच.आर. हेड युवराज श्रीवास्तव ने बताया कि इस समय कंपनी में कुल 40 दिव्यांग काम कर रहे हैं। कंपनी इनकी देखरेख के लिए हर विकलांग कर्मचारी के साथ कुछ लोगों को रखता है। साथ ही उनको उनकी क्षमताओं के आधार पर काम करने का मौका दिया जाता है।



दृष्टिहीन लोग देख नहीं सकते लेकिन उनकी सुनने की क्षमता दूसरों से ज्यादा बेहतर होती है। ऐसे में उनको ऐसे डिपार्टमेंट में रखा जाता है जहां सुनने के आधार पर काम किया जाए। इसी तरह हर व्यक्ति में एक खास तरह की क्षमता होती है। प्रोग्रामिंग से लेकर लीगल तक कंपनी के हर विभाग में दिव्यांगों को काम करने का अवसर दिया जा रहा है।

कोई भी कर सकता है सीधे आवेदन



कंपनी दिव्यांगों का चुनाव कई एन.जी.ओ. की मदद से करती है लेकिन इसके अलावा कोई भी व्यक्ति रोजगार के लिए सीधे भी आवेदन कर सकता है। इसके लिए कंपनी की वेबसाइट <http://careers.make-mytrip.com/> पर जाएं। इसके बाद जॉब के ऑप्शन पर क्लिक कर अप्लाई कर दें। यहां अपने बारे में जानकारी दें।

अपने मत की कीमत पहचानें, वोट जरूर करें



भारत लोकतंत्र प्रणाली का देश है। इसलिए प्रत्येक को एक-एक मत की कीमत को समझना चाहिए। आदर्श लोकतंत्र की स्थापना मतदाता की जागरूकता पर निर्भर करती है। इसीलिए हर एक वोट कीमती हैं।

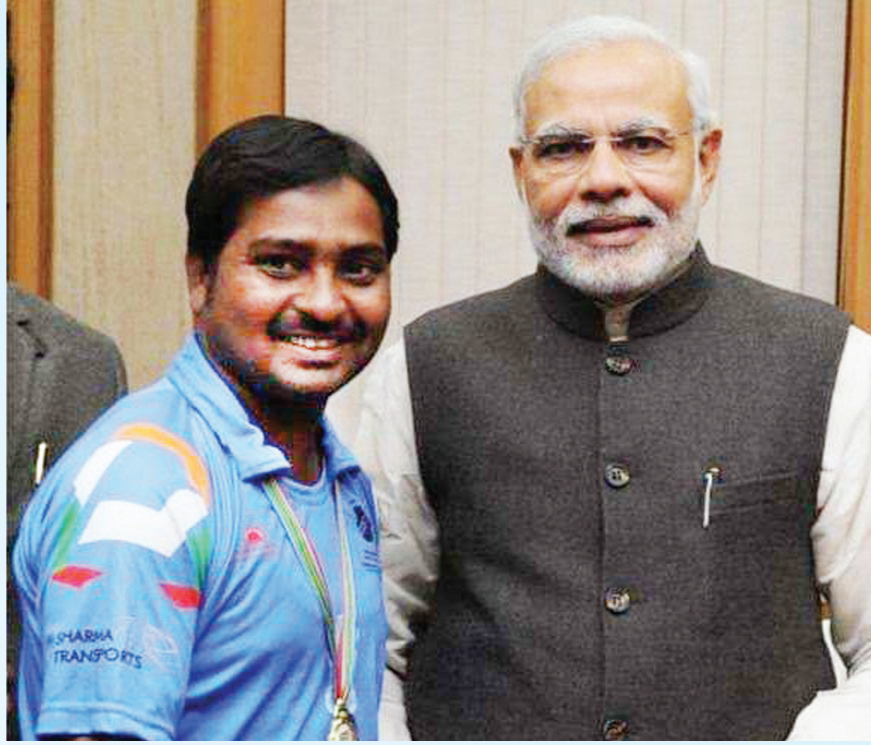
भारत का नागरिक होने के अधिकारों में एक हैं मताधिकार। क्यों चुने हम अन्य वर्गों द्वारा पसंद की गई सरकार? हमारे हृदय में भी कुछ एसी बातें चल रही होंगी, जैसे की, सरकार को यह चीजें करनी चाहिए, यह कदम अच्छे हैं, ये नहीं हो सकता-गलत बात है वगैरा..वगैरा.. जिस तरह आम आदमी को सिस्टम से तकलीफ़ हैं, वैसे भी दिव्यांगों को भी हैं। अंतर सिर्फ़ विविधता का हैं। विविध प्रकार की तकलीफ़ों की वजह अलग, वजूद अलग, विवशता अलग। तो फिर देरी किस बात की हैं? जब दिव्यांगों को भी मताधिकार प्राप्त हैं तो चुनिए अपनी पसंदगी की सरकार, अपना काम करें एसा लोकसेवक, अपनी तकलीफ़ों को समझे एसा अपने समाज का प्रत्याशी।

आज सरकारें भी दिव्यांगों के वोट को समाज रही है। तब जरूरी हैं की अब हम भी अपनी महत्वता समजें। सरकार दिव्यांग मतदाताओं को संबंधित मतदान केन्द्रों पर व्हील चेयर

के माध्यम से ले जाने के लिए रेम्प, ब्रेल वोटर स्लिप, की व्यवस्था भी कर रही है। दृष्टिबाधित मतदाता ब्रेल वोटर स्लिप के जरिए मतदान कर सकेंगे। ब्रेल के माध्यम से वे अपने प्रत्याशी का चयन कर अपने मत का प्रयोग कर सकेंगे। इसी तरह, विशेष तौर पर सक्षम, मूकबधिर और अन्य दिव्यांगों के लिए संबन्धित बूथों पर व्हील चेयर ले जाने के लिए रेम्प, सहयोग के लिए सहयोगी और जहां संभव हो वहां वाहन की व्यवस्था भी की गई है।

भारतीय लोकतंत्र की एक बहुत बड़ी खूबी है कि अमीर-गरीब की वोट की कीमत एक समान है। राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के वोट की जो कीमत हैं, वही कीमत 'डिफ्रेंटली एबल्ड' और अन्य के भी वोट की है। एक वोट से आपका भाग्य तय करने वाले का निर्वाचन होगा। इसलिए आप अपने वोट की कीमत को पहचाने व एक बेहतर सरकार बनाने के लिए अपने मतदान का प्रयोग अवश्य करें।

मताधिकार का उपयोग क्यों न करें? चाहिए काम की सरकार, तो ज़रूर करें मतदान। आपका वोट कीमती है।



शेखर नायक कप्तान, भारतीय नेत्रहीन क्रिकेट टीम

भारतीय नेत्रहीन क्रिकेट टीम के कप्तान, शेखर नायक को हाल ही में 'राज्योत्सव अवोर्ड्स' के लिए पसंद किया गया। शेखर नायक ने बताया की, "यह अवोर्ड सिर्फ मेरे हौसले को नहीं बढ़ाता, बल्कि पूरे दिव्यांग समुदाय के मनोबल को बढ़ाता है।"

मुश्किलों से हार न माननेवाले असली नायक है।

कर्नाटक के एक छोटे से जिले शिमोगा में जन्मा शेखर बचपन से ही आंखों की रोशनी से वंचित था। यह उसके परिवार की आनुवांशिक बीमारी थी। शेखर की मां नानी भी दृष्टिहीन थीं। आठ साल की उम्र में एक दिन अचानक शेखर नदी में गिर गया। इस हादसे ने उसकी जिंदगी को एक नया मोड़ दिया। इसी समय शिमोगा में एक आई कैंप लगा था। आपात इलाज के लिए जब शेखर वहां पहुंचा तो उसकी आंखों की जांच भी की गई। जांच से पता लगा कि शेखर की आंखों की रोशनी वापस आ सकती थी।

ब्लाइंड स्कूल से खेलना शुरू किया क्रिकेट

इलाज के लिए उसे बेंगलुरु लाया गया और एक ऑपरेशन के बाद शेखर की दाईं आंख की रोशनी 60 प्रतिशत तक लौट आई। आंखों की रोशनी लौटने के तीन महीने के भीतर ही शेखर के पिता का देहांत हो गया। पिता की मृत्यु के डेढ़ साल बाद शेखर की मा ने उसे एक ब्लाइंड स्कूल में दाखिला दिला दिया। इस वक्त उसकी उम्र 11 वर्ष थी और उसने पहली क्लास में प्रवेश लिया था। इसी दौरान उसने क्रिकेट खेलना शुरू किया।

अपने स्कूल के लिए शेखर ने इस समय स्टेट लेवल टूर्नामेंट खेला। उसके साथी उसकी दृष्टिहीनता का मजाक बनाते थे, लेकिन मुश्किल घड़ियों में मा उसका हौसला बढ़ाती। क्रिकेट में बड़ा मुकाम हासिल करने की प्रेरणा शेखर को मा से मिली थी। 12 वर्ष की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते शेखर की मा भी चल

बसी। अब उसके पास कोई नहीं था, जो उसका ख्याल रखता और उसे प्रोत्साहित करता। संघर्ष के इस दौर में भी उसने हिम्मत नहीं हारी। छुट्टियों में खेतों में काम करके शेखर अपनी फीस और पढ़ाई का खर्च जुटाता था।

एक टूर्नामेंट ने बदल दी जिंदगी

इसी दौर में स्कूल के एक फिजिकल ट्रेनर का प्रशिक्षण उसके काफी काम आया। शेखर बताते हैं, वे प्रैक्टिस के दौरान मेरे पीछे खड़े रहते थे और हर गलत शॉट पर डंडे से मारते थे। इस डर की वजह से मैं कोई शॉट नहीं छोड़ता था। अब दिन रात उसके ख्याल में क्रिकेट ही छाया रहता था। सन 2000 में शेखर ने एक टूर्नामेंट में महज 46 गेंदों में 136 रन बनाकर सभी को चौंका दिया और उन्हें कर्नाटक टीम में प्रवेश मिल गया। अब उनके आत्मविश्वास को काफी बल मिला। एक टूर्नामेंट के फाइनल मुकाबले में शेखर ने 249 रनों की पारी खेली, जिसके बाद तो सारे रास्ते मानो खुलते चले गए।

2001 में अंडर 18 टूर्नामेंट में उन्हें मैन ऑफ सीरीज चुना गया, जिसके बाद उनका चयन भारत की विश्व कप टीम में हो गया। 2012 के टी 20 विश्व कप में शेखर भारत की ब्लाइंड टीम के कप्तान रहे। कड़े संघर्ष को इस मुकाम तक पहुंचा कर शेखर ने एक ऐसी मिसाल कायम की, जहां शारीरिक अक्षमता को कभी किसी हार के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। शेखर नायक की कप्तानी में भारतीय नेत्रहीन टीम 2012 और 2014 का वर्ल्ड कप जीती है। 2017 में उनको पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

अरुणिमा सिन्हा

साहस और जुनून की कहानी



कहते हैं, हवा के अनुकूल चलने वाला जहाज कभी बन्दरगाह नहीं पहुंचता। प्रतिकूल परिस्थितियों में जो अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होता, सफलता उसके कदम चूमती है। कृत्रिम पैर के सहारे हिमालय की सबसे ऊँची चोटी 'माउंट एवरेस्ट' फतह कर उत्तर प्रदेश के अम्बेडकरनगर का नाम रोशन करने वाली अरुणिमा सिन्हा कहती हैं, 'मेरा कटा पांव मेरी कमजोरी था। उसे मैंने अपनी ताकत बनाया।'

बास्केट बॉल खिलाड़ी अरुणिमा को 11 अप्रैल 2011 की

वह काली रात आज भी याद आती है, जब पद्मावत एक्सप्रेस से वह दिल्ली जा रही थीं। बरेली के पास कुछ अज्ञात बदमाशों ने उनके डिब्बे में प्रवेश किया। अरुणिमा को अकेला पाकर वे उनकी चेन छीनने लगे। छीना-झपटी के बीच बदमाशों ने उन्हें ट्रेन से नीचे फेंक दिया। जिससे उनका बाया पैर कट गया। लगभग सात घण्टों तक वे बेहोशी की हालत में तड़पती रहीं। इस दौरान दर्जनों ट्रेने गुज़र गईं। सुबह टहलने निकले कुछ लोगों ने जब पटरी के किनारे अरुणिमा को बेहोशी की हालत में पाया तो तुरंत अस्पताल पहुंचाया। जब मीडिया सक्रिय हुआ तो अरुणिमा को दिल्ली के एम्स में भर्ती कराया गया। एम्स में इलाज के दौरान उनका बाया पैर काट दिया गया। तब लगा बास्केट बॉल की राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी अरुणिमा अब जीवन में कुछ नहीं कर पायेगी। लेकिन उन्होंने जिन्दगी से हार नहीं मानी। भारतीय क्रिकेटर युवराज सिंह और देश के सबसे युवा पर्वतारोही अर्जुन वाजपेयी के बारे में पढ़कर अरुणिमा ने उनसे प्रेरणा ली।

अरुणिमा की आंखों से आंसू निकले, लेकिन उन आंसुओं ने उन्हें कमजोर करने के बजाये साहस प्रदान किया और देखते ही देखते अरुणिमा ने दुनिया के सबसे ऊंचे शिखर माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने की ठान ली। अरुणिमा ने ट्रेन पकड़ी और सीधे जमशेदपुर पहुंच गईं। वहां उन्होंने एवरेस्ट फतह कर बर्चेद्री पाल से मुलाकात की। फिर तो मानो उनके पर से लग गये। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद 31 मार्च को उनका मिशन एवरेस्ट शुरू हुआ। 52 दिनों की इस चढ़ाई में 21 मई को माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा फहराकर वे विश्व की पहली विकलांग पर्वतारोही बन गईं। अरुणिमा का कहना है विकलांगता व्यक्ति की सोच में होती है। हर किसी के जीवन में पहाड़ से ऊंची कठिनाइयां आती हैं, जिस दिन वह अपनी कमजोरियों को ताकत बनाना शुरू करेगा हर ऊँचाई बौनी हो जायेगी।

अरुणिमा अपनी तकलीफों से लेकर अपनी सफलता के बारे में बताती है, “मूलतः हम बिहार के रहने वाले थे। पिताजी फौज में थे जिस कारण हम लोग सुल्तानपुर आ गये। चार वर्ष की उम्र में पिता का स्वर्गवास हो गया। मां के साथ हम अम्बेडकरनगर पहुंचे वहां उन्हें स्वास्थ्य विभाग में नौकरी मिल गई। पर परिवार को चलाना अब भी मुश्किल था। फिर भी एलएलबी की पढ़ाई की। खेलों में रुझान होने के कारण राष्ट्रीय स्तर पर वॉलीबाल व फुटबाल में कई पुरस्कार जीते, लेकिन कुछ खास हाथ न लग सका। पर मेरा एक सपना था कुछ अलग करने का।

52 दिनों की यात्रा हर पल रोमांच खतरों और हौसलों की कहानी से भरी थी, जिसमें सबसे मुश्किल डेथ जोन एरिया खंबू आइसलैण्ड के थे। बर्फ की चट्टानों पर चढ़ाई करनी थी। सिर पर चमकता सूरज था। कब कौन सी चट्टान पिघलकर गिर जाए, अंदाजा लगाना मुश्किल था।

जब मैं माउंट एवरेस्टन पर चढ़ रही थी तभी पहले उसे पार करने की कवायद कर चुके आधा दर्जन से ज्यादा पर्वतारोहियों की सामने पड़ी लार्शें रॉगटे खड़ी कर देती थीं। कभी बर्फ उन्हें ढक देती कभी हवा के झोके उन पर ढकी बर्फ हटा देते। ऐसे मंजर का सामना मुश्किल था, लेकिन नामुमकिन नहीं।

पर्वत पर चुनौतियों का सामना करना बहुत मुश्किल था। पर धैर्य नहीं खोया। इसी बीच मेरा आक्सीजन सिलेण्डर खत्म हो गया था। कैम्प से मेरे पास फोन आ रहे थे, अरुणिमा तुम वापस आ जाओ जहां तक तुम पहुंची हो वो भी एक रिकार्ड है। पर मैंने तो मंजिल को पाने की ठानी थी, बीच में कैसे आ जाती।

मैं बस इतना कहना चाहती हूं, कि परिस्थितियां बदलती रहती हैं। पर हमे अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिये बल्कि उनका सामना करना चाहिये। जब मैं हॉकी स्टिक लेकर खेलने जाती तो मोहल्ले के लोग मुझ पर हसते थे, मेरा मज़ाक उड़ाते थे। शादी हुई और फिर तलाक, पर मैंने हार न मानी। बड़ी बहन व मेरी मा ने मेरा साथ दिया। हादसे के बाद मेरे जख्मों को कुरेदने वाले बहुत थे पर मरहम लगाने वाले बहुत कम। इतना कुछ होने के बाद मैंने अपने लक्ष्य को पाने के लिए पूरा जोर लगा दिया। अन्ततः मुझे सफलता मिली।”

अरुणिमा के जीवन का एक मजेदार किस्सा:

अरुणिमा का मैदान में खेलना आस-पड़ोस के कुछ लड़कों को खूब अखरता। वो अरुणिमा पर तरह-तरह की टिप्पणियां करते। अरुणिमा को छेड़ने की कोशिश करते। लेकिन, अरुणिमा शुरू से ही तेज़ थी और माँ के लालन-पालन की वजह से विद्रोही स्वभाव भी उसमें था। वो लड़कों को अपनी मन-मानी करने नहीं देती। छेड़छाड़ की कोशिश पर अरुणिमा ऐसे तेवर दिखाती, जिससे डरकर लड़के दूर भाग जाते। एक बार तो अरुणिमा ने उसकी बहन से बदतमीज़ी करने वाले एक शख्स की भरे-बाजार में पिटाई कर दी थी।

हुआ यूं था कि, अरुणिमा अपनी बड़ी बहन के साथ साइकिल पर कहीं जा रही। बीच में एक जगह रूककर बड़ी बहन किसी से बात करने लगीं। अरुणिमा थोड़ा आगे निकल गयी और वहीं रुककर अपनी बहन का इंतजार करने लगी। इसी बीच साइकिल पर सवार कुछ लड़के वहां से गुजरे। लड़कों ने अरुणिमा से उनके लिए रास्ता छोड़ने को कहा। अरुणिमा ने उन लड़कों से आगे खाली जगह से निकल जाने को कहा और अपनी जगह पर टिकी रही। अरुणिमा के इस रवैये से नाराज़ लड़कों से उसकी बहस शुरू हुई और इसी बीच बड़ी बहन वहां आ गयी। तैश में आये एक लड़के ने हाथ उठा दिया और अरुणिमा की बहन के गाल पर चांटा मारा। इस बात से अरुणिमा को बहुत गुस्सा आया और उसने उस लड़के को पकड़ कर पीटने की सोची। लेकिन, भीड़ का फायदा उठा कर वो लड़का और उसके साथी भाग निकले। लेकिन, अरुणिमा ने ठान ली कि वो उस लड़के को नहीं छोड़ेगी। दोनों बहनें उस लड़के की तलाश में निकल पड़े। आखिर वो लड़का उन्हें पान की एक दूकान पर दिखाई दिया। अरुणिमा ने उस लड़के को पकड़कर उसकी जमकर धुनाई की। इस धुनाई पर खूब बवाल मचा। कई लोगों ने लड़के को छुड़वाने की बहुत कोशिश की लेकिन, अरुणिमा नहीं मानी। लड़के ने माँ-बाप ने जब आकर अपने लड़के की करतूत पर माफी माँगी, तब जाकर अरुणिमा ने लड़के को छोड़ा। इस घटना का नतीजा ये हुआ कि मोहल्ले में लड़कों से लड़कियों से साथ बदसलूकी बंद कर दी। अरुणिमा की बहादुरी और उसके तेवर की चर्चा अब मोहल्ले भर में थी।



पोलियो के बारे में जानकारी

क्या है पोलियो?

पोलियो मुख्य रूप से छोटे बच्चों को जिनकी उम्र 1 से 5 वर्ष तक की होती है, उन्हीं को अधिक प्रभावित करता है। यह रोग मुख्य रूप से एक प्रकार के वायरस के कारण होता है जो कि नवजात शिशुओं या 5 वर्ष तक के बच्चों के शरीर में प्रवेश कर जाता है और उनके पैरों को कार्य करने योग्य नहीं छोड़ता। लेकिन यह शरीर के किसी भी अंग को प्रभावित कर सकता है।

यह वायरस, बच्चों में विकलांगता पैदा कर देता है। इस रोग से ग्रस्त बच्चे खड़े होकर नहीं चल पाते, और वे अपने हाथ से भी कार्य करने में भी असमर्थ हो जाते हैं। यह मुख्य रूप से बच्चों को ही अपना शिकार बनाता है, और इसलिए इसे शिशुओं का लकवा या बाल पक्षाघात भी कहा जाता है।

कैसे फैलता है पोलियो?

पोलियो एक ऐसा रोग है, जो मुख्य रूप से वायरस के कारण फैलता है। इस वायरस को विज्ञान की भाषा में पॉलीवाइरस के नाम से जाना जाता है। ज्यादातर वायरस युक्त भोजन के सेवन से यह रोग होता है। दूषित भोजन खाने से यह वायरस शरीर में सिर तक पहुंच जाता है, जिसके कारण सिर की कोशिकायें नष्ट होने लगती हैं। यह वायरस श्वासस तंत्र से भी शरीर में प्रवेश कर सकता है। यह वायरस स्पाइनल कॉर्ड पर संक्रमण करके वहां पर सूजन पैदा कर देता है। इस सूजन के कारण बच्चे के हाथ और पैर कार्य करना बंद कर देते हैं। इसके अलावा गर्भवती महिला को यदि उचित प्रोटीन युक्त भोजन नहीं मिलता, तो उसके बच्चे को भी पोलियो हो सकता है।

लक्षण

इस रोग से पीड़ित बच्चों के सिर में दर्द, सिर में चुभन रहती है, और बच्चा बैचेन रहता है। रोगी बच्चे की रीढ़ की हड्डी में जकड़न महसूस होती है। 2 या 3 दिनों में ये सभी लक्षण खत्म हो जाते हैं और इसके बाद, बच्चे के हाथ और पैर कार्य करना बंद कर देते हैं। इस तरह से बच्चा विकलांग बनकर रह जाता है। इस रोग से प्रभावित बच्चा चलने-फिरने और कोई अन्य कार्य करने में भी असमर्थ हो जाता है।

आज भी पोलियो ड्रॉप है ज़रूरी

पोलियो के दर्दी अब कम हो रहे हैं लेकिन आज भी पोलियो के लिए पोलियो ड्रॉप बहतर उपाय है। पोलियो के विषाणु के खतरे को हमेशा के लिए टालने के लिए यह दवा पिलानी ज़रूरी है। यह पोलियो की दवा बच्चे को पोलियो ड्रॉप और टीका दोनों के जरिये दी जाती है। लेकिन पोलियो ड्रॉप को पोलियो टीके से बेहतर मानी जाती है। क्योंकि पोलियो के टीके लगवाने के बाद कई बच्चों को टीके स्थान पर दर्द और मवाद की शिकायत होती है। ये टीके के दुष्प्रभाव से नहीं बल्कि टीके के दूषित होने के कारणों से होता है। साथ ही पोलियो के टीके के साथ एक समस्या भी है कि इसे हमेशा दो से आठ डिग्री से 0 की बीच तापक्रम में रखना चाहिए। नहीं तो इसकी क्षमता नष्ट हो जाती है। वहीं सामान्य छोटी शीशी में



पोलियो की दस खुराकें होती हैं। शीशी को एक बार खोलने के बाद बिना ताप बदले 10 खुराकें बच्चों को दे देनी चाहिए। ऐसे में पोलियो मुक्त अभियान के दौरान बच्चों को टीके की तुलना में ड्रॉप देना बेहतर होता है।

पोलियो के बारे में अधिक जानकारी

हर साल की 24 अक्टूबर की तारीख को वर्ल्ड पोलियो डे मनाया जाता है। अक्टूबर के महीने में पोलियो वैक्सीन के जनक डॉ. जोनॉस सॉल्क का जन्म हुआ था, जिनको श्रद्धांजली देने के लिए इस दिन वर्ल्ड पोलियो डे के तौर पर चुना गया। उनके इस वैक्सीन के कारण आज पोलियो का इलाज संभव है। पोलियो एक तरह की संक्रामक बीमारी है जिसका पोलियो विषाणु बच्चों पर हमला करके उन्हें जीवनभर के लिए कमजोर कर देता है।

पोलियो का वायरस कैसे फैलता है?

पोलियोवायरस, जो पोलियोमाइलाइटिस के प्रेरक एजेंट हैं, तीन प्रकार के हो सकते हैं। वायरस तीन तरीकों से संक्रमित होता है:



हवाई बूँदें अगर रोगाणु रोगी या संक्रमण के वाहक में ग्रसनी बलगम में पाया जाता है, खांसी या छींक के दौरान, पोलियोवायरस एक स्वस्थ व्यक्ति के श्वसन तंत्र में प्रवेश कर सकते हैं और रोग के विकास को भड़काने में सक्षम हैं।



ओरल-फेकल मार्ग इस मामले में, विषाणु, बिना ताजे सब्जियों या फलों के साथ बन्द किए गए दूध के उपयोग के कारण संक्रमण होता है। खाद्य पदार्थों को पाने के लिए वायरस के माध्यम से बीमार व्यक्ति के एक्साम्प्लर्स से वायरस - मक्खी।

घरेलू तरीके आम उपयोग और आम बर्तन की वस्तुओं को साझा करके वायरस प्रसारित होता है।

दिव्यांगो के लिए स्माइल यर

दिनांक २६ जनवरी, २०१७ से दिनांक २६ जनवरी २०१८ तक अँकार,
फाउन्डेशन ट्रस्ट NGO के माध्यम से क्रिस्टल डेन्टल केर
(डॉ. शाश्वत जैन एवं चिकित्सक दल) दिव्यांगो व शहीद सैनिकों के जरूरमंद
परिवारों के लिए निःशुल्क जाँच एवं निदान के लिए प्रतिबद्ध है।



KRYSTAL DENTAL CARE



DIGITAL SMILE DESIGN & IMPLANT CENTRE

180, Titanium City Centre Mall, Near IOC Petrol pump,
Anandnagar Road, Satellite, Ahmedabad-380015

Clinic: 079 48008004

DR. SHASHSVAT JAIN

+91 9978601890

MDS: Prosthodontics (Manipal)

PGCOI: Implant Specialist

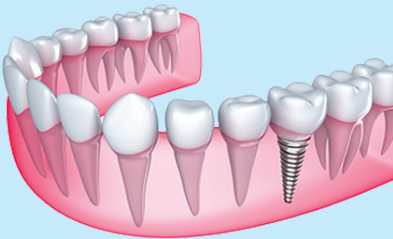
DSD: Dental Smile Design

TIMINGS:

10:00 am to 8:00 pm

CONSULTANT PROSTHODONTIST & IMPLANTOLOGIST

- Maxillofacial Prosthetics
- Cancer Rehabilitation
- Trauma Rehabilitation
- Implant Rehabilitation
- Digital Smile Designing
- Full Mouth Rehabilitation
- Crowns & Veneers
- Full & partial Dentures



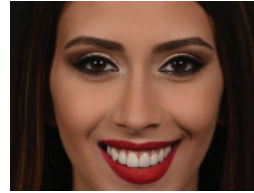
दांतना तमाम दर्दोनुं अेकमात्र समाधान अेटले...

क्रिस्टल डेन्टल केर

Digital Smile Designing



Before



After



Crown Treatment



Implant Treatment

WHAT WE DO

- Implant treatment
- Digital Smile Design
- Dentistry for aged patients
- Fixed and removable dentures
- Crowns & veneers
- Prosthetic replacements (Eye, Ear, Nose, Fingers)
- Orthodontics
- Dentistry for kids
- Root canal treatment
- Gum treatment
- Laser dentistry

OPG facility available

Pick up & Drop facility for senior citizens

Website : www.krystaldentalcare.com • E-mail : drs@krystaldentalcare.com